International Journal for Innovative Engineering and Management Research

PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL

www.ijiemr.org

COPY RIGHT

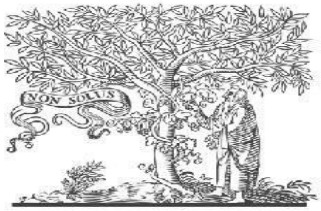

ELSEVIER SSRN

2022 IJIEMR. Personal use of this material is permitted. Permission from IJIEMR must be obtained for all other uses, in any current or future media, including reprinting/republishing this material for advertising or promotional purposes, creating new collective works, for resale or redistribution to servers or lists, or reuse of any copyrighted component of this work in other works. No Reprint should be done to this paper, all copy right is authenticated to Paper Authors

IJIEMR Transactions, online available on 26th Dec 2022. Link

:http://www.ijiemr.org/downloads.php?vol=Volume-11&issue=Issue 12

10.48047/IJIEMR/V11/ISSUE 12/108

TITLE: *शविनी क़ेउपन् यासयेमे नारचिेताना की प् रकृ तकिा अध् यायन*

Volume 11, ISSUE 12, Pages: 814-818

Paper Authors **ANJANI SHARMA, DR. DIGVIJAY SHARMA**

USE THIS BARCODE TO ACCESS YOUR ONLINE PAPER

To Secure Your Paper As Per UGC Guidelines We Are Providing A Electronic Bar Code

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना की प्रकृति का अध्ययन

CANDIDATE NAME- ANJANI SHARMA
DESIGNATION- RESEARCH SCHOLAR OPJS UNIVERSITY CHURU RAJASTHAN
GUIDE NAME - DR. DIGVIJAY SHARMA
DESIGNATION- ASSISTANT PROFESSOR & D.LITT , DEPARTMENTIN HINDI OPJS UNIVERSITY CHURU RAJASTHAN

सारांश

नारी संवेदना की चितेरी लेखिका शिवानी स्त्री–जीवन का अद्‌भुत रूप अपनी कलम की जादूगरी से बिखेरती चलती है। शिवानी जी ने नारी–चित्रण में भाभियाँ, बहनें, बेटियाँ सभी को केन्द्र में रखा है। स्त्री जीवन में प्रेम के महत्त्व को वह बखूबी समझती है और सबसे बड़ी बात यह है कि उसे वैवाहिक बंधनों से मुक्त रखकर उसकी नैसर्गिक प्रकृति पर नाटकीयता का मुलम्मा नहीं चढ़ाती। उनकी कथावस्तु यथार्थ की चेतना पर आधारित है। शिवानी ने नारी के कमजोर पक्ष का विश्लेषण कर उसकी मार्मिक वेदना में करूणा का मिश्रण तो करती है किन्तु पुरुष के नाम पर तीव्र घृणा का संचार कर दोनों के बीच गहरी खाई का निर्माण वो नहीं करती। वह बेहद संतुलित ढंग से नर–नारी के संबंधों में सुधार की हिमायती है। पर जहाँ उद्वेग तीव्र हो वहाँ स्त्री का उग्र रूप भी सामने जरूर आता है। नारी–मन के हर रंग से चिर परिचित शिवानी हर क्षण अपने चरित्रों के साथ बोलती–बतियाती दिखायी देती है। वे अपनी कथाओं के माध्यम से स्त्री की उन विशेषताओं को रेखांकित कर, विश्लेषित देती हैं जिन्हें आम आदमी नहीं देख पाता। 'केया' कहानी का एक उदाहरण दृष्टव्य है, ''सामान्य–सा परिचय भी एकांत के साहचर्य में दो स्त्रियों को ऐसे घुल–मिला देता है, जैसे वे वर्षों की पूर्वपरिचित हों। अपने हृदय के अन्तरतम कक्ष की कुंजी फिर दूसरी को थमाने में नारी नहीं हिचकती, ऐसा निष्कपट आत्म–निवेदन, कभी किसी पुरुष के लिए सम्भव नहीं होता।

मुख्यशब्द : नारी संवेदना, कथावस्तु, शिवानी, पूर्वपरिचित

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में 'उपन्यास' भी नवीनतम विधाओं में से एक है। आज के युग में गद्य की विविध विधाओं का विकास हुआ है। उनमें 'उपन्यास' एक ऐसी विधा है जो अधिक लोकप्रिय है। "अंग्रेजी में जिसे 'नोवेल' कहते है, बंगला में उसे 'उपन्यास' नाम से अभिहित किया जाता है और बंगला के समान ही हिन्दी में यह विधा 'उपन्यास' नाम से प्रचलित है।"1 "उपन्यास – उप + नि + अस + धर्म के योग से बना है, जिसके अनेक अर्थ हैं – निकट रखना, धरोहर, अमानत, वक्तव्य, प्रस्ताव, सुझाव, भूमिका, प्रस्तावना, संकेत, उल्लेख आदि। 'उप' उपसर्ग से निकट का बोध होता है और 'न्यास' थाती या धरोहर का बोधक है। सामान्य अर्थ यह ग्रहण किया जा सकता है कि मनुष्य के निकट रखी हुई वस्तु।"2 उपन्यास को किसी निश्चित् परिधि में बाँधना और उसको कोई निश्चित परिभाषा देना बहुत ही कठिन है। विविध विद्वानों ने इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है। उपन्यास को परिभाषित करते हुए प्रेमचंद ने लिखा हैं – "उपन्यास को मानव चरित्रा का चित्रा मात्रा समझता हूँ। मानव चरित्रा पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।"

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार – "वर्तमान जगत में उपन्यासों की बड़ी शक्ति है। समाज जो रूप पकड़ रहा है, उसके भिन्न–भिन्न वर्गो में जो प्रवृतियाँ उत्पन्न हो रही हैं, उपन्यास उनका विस्तृत प्रत्यक्षीकरण ही नहीं करते,

आवश्यकता अनुसार उनके ठीक विन्यास, सुधार अथवा निराकरण की प्रवृत्ति भी उत्पन्न कर सकते हैं। .... लोक या किसी जनसमाज के बीच काल की गति के अनुसार जो मूढ़ और चित्य परिस्थितियाँ खड़ी होती रहती हैं, उनको गोचर रूप में सामने लाना और कभी–कभी निस्तार का मार्ग भी प्रत्यक्ष करना उपन्यास का काम है।"

"डॉ. भगीरथ मिश्र के अनुसार युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक पूर्ण व्यापक झाँकी प्रस्तुत करने वाला गद्य–काव्य उपन्यास कहलाता है।" 5 डॉ. श्यामसुन्दर दास की परिभाषा है – "उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।" 6 "उपन्यास आज मानव की अपनी परिस्थितियों के साथ उसके संबंध की, अपने परिपार्श्व के प्रति उसके दृष्टिकोण के उत्तरोत्तर विकास की अभिव्यक्ति बन गया है। हिन्दी उपन्यास इस प्रक्रिया का अपवाद नहीं।" 7 डॉ. गुलाबराय के शब्दों में – "उपन्यास कार्यकारण श्रृंखला में बँधा हुआ वह गद्य कथानक है जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार तथा पेचीदगी के साथ वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों से संबंधित वास्तविक या काल्पनिक घटनाओं द्वारा मानव जीवन के सत्य का रसात्मक रूप से उद्‌घाटन किया जाता है।" 8 "उपन्यास में दुनिया जैसी है वैसी चित्रित करने का प्रयास रहता है।" 9 "उपन्यास यथार्थ मानव अनुभवों एवं सत्य का आंकलन है, वह जीवन की एकता में अनेकता तथा अपूर्णता में समग्रता स्थापित करने का प्रयत्न करता है।" 10 उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर आ सकते हैं कि उपन्यास में मानव जीवन का चित्राण होता है और उपन्यास में केवल काल्पनिक कथा नहीं है उसका आधार यथार्थ है। उपन्यासकार केवल कल्पना में उड़ान नहीं भरता बल्कि उसकी कलम का आधार धरातल है। गद्य में रचित यह केवल काल्पनिक उड़ान नहीं है। इसकी उपज तो इसी धरती की मिट्टी से हुई है।

शिवानी के उपन्यासों का परिचय :

शिवानी की लोकप्रियता का कारण उनके उपन्यास हैं। शिवानी ने धार्मिक अंधश्रद्धाओं, सामाजिक विषमताओं और आर्थिक विसंगतियों को ध्यान में रखकर उपन्यासों की रचना की है। शिवानी के उपन्यासों को दो भागों में विभाजित किया गया है। (1) बृहत उपन्यास और (2) लघु उपन्यास। शिवानी के बृहत एवम् लघु उपन्यासों के बारे में लिखा हैं – "बड़े उपन्यास में गौण कथाओं के लिए भी अवकाश रहता है। दूसरी तरह से कहना हो तो इसमें उपन्यासकार के सामने बड़ा फलक होता है, जिस पर वह अपनी कल्पना के अनुसार घटना, पात्रा और वातावरण की सृष्टि कर सकता है। लघु उपन्यासों में लेखक का फलक अपेक्षाकृत सीमित होता है। लघु उपन्यासों का कथानक कहानी के जैसा हुआ होता है। शिवानी ने इन दोनों प्रकार के उपन्यासों की वस्तुयोजना विचारपूर्वक की है।"

शिवानी के बृहत उपन्यास :

"बृहत उपन्यास अपनी समग्रता और संपूर्णता को लेकर मंद गति से चलता है। श्रृंखलाबद्ध कथानक द्वारा सरल एवम् गूढ़ मानव चरित्रा निर्माण, उनकी समस्याओं, सक्रिय गतिविधियों तथा सामाजिक एवं मानसिक संघर्षो से युक्त उनके स्वभावों एवं मन की शक्तियों का पूर्ण जीवन्त एवं यथार्थ चित्रा कल्पना द्वारा जिस साहित्य रूप द्वारा प्रस्तुत किया जाता उसे उपन्यास कहते हैं।"

आधुनिक उपन्यास लेखिकाओं में शिवानी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शिवानी के निम्नलिखित नौ उपन्यासों की गणना बृहत उपन्यासों में की गई है।

मायापुरी :

विकास क्रम की दृष्टि से देखा जाये तो 'मायापुरी' शिवानी का प्रथम उपन्यास है। यह उपन्यास सन् 1957 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में विलासमय, फैशनेबल, अधिकार सम्पन्न संसार को अपने आक्रमण का लक्ष्य बताते हुए प्रेम और विवाह की समस्या को उठाया है। सतीश एक

महत्त्वकांक्षी लड़का है परन्तु किसी के अहसान के बोझ के नीचे दबा हुआ है। उसके पिता की स्थिति ऐसी नहीं है कि वह उसके पुत्रा की इच्छाओं को पूरा कर सके। तिवारी की लड़की सविता को विवाह द्वारा अपनाकर वह उसकी इच्छाओं को पूरा कर सकता है। सविता को वह जैसे अपनी इच्छा पूर्ति का साधन मानता है। वह डाक्टरी शिक्षा पाने के लिए विलायत जाता है किन्तु लौटने पर अनुभव करता है कि सविता भोली भाली सविता नहीं रही जिसे उसने देखा और जाना था। सविता के रूप में एक बेडैल युवती को देखकर उसका मन निराशा से भर जाता है। माँ की आश्रिता शोभा की सुषमा उसे मोह लेती है। सतीश मुग्ध होता है और शोभा सतीश के पास में बंध जाती है, किन्तु सतीश की माँ उसकी भावनाओं को महत्त्व नहीं देती। माँ अपने वचन को निभाने के लिए सविता और सतीश को विवाह बंधन में बाँध देती है। सतीश अपनी पत्नी सविता से धृणा करने लगता है – "कभी मेरी इच्छा होती है कि उसका गला घोंटकर ताल में फेंक दूँ इसी से मैं भागकर काबुल जा रहा हुँ।" 13 सतीश दुर्घटना में घायल होकर इस दुनिया से विदा हो जाता है। इधर शोभा अनेक कष्ट झेलकर नैपाली राजवंश की एक रानी की सचिव बन जाती है और एकनिष्ठ प्रेम को निभाने के लिए बड़े धीरज और साहस से अपना जीवन बिताने लगती है। इस तरह शोभा का कठिनाइयों से जूझते रहता उसके एकान्त प्रेम का परिणाम है और सतीश का टूटना प्रेम में कायर बनने का फल है।

इस उपन्यास में दूसरी कथा मंजरी और अविनाश के सफल वैवाहिक जीवन की है। विवाह दो दिलों का बन्धन है, इसका निरूपण मंजरी और अविनाश के सफल वैवाहिक जीवन के माध्यम से किया गया है। अविनाश उषा के प्रेम से निराश होकर जीवन में इस भूल को दोहराना नहीं चाहता, किन्तु मंजरी का आकर्षण और उसका बढ़ता हुआ हाथ ठुकरा भी नहीं पाता। इनका प्रेम विवाह के रूप में परिणत होता है। इस जीवन में सहजता और सहयोग है और इनका जीवन सुखी और सम्पन्न है। इसके विपरीत सतीश और सविता का जीवन है। इन दो युगलों के जीवन में विषमता को अंकित किया गया है। सविता अपने पति सतीश की आड़ लेकर परपुरुष से प्रेम–सम्बन्ध स्थापित करती है। "'मायापुरी' शिवानी का ही एक अन्य सशक्त एवं मार्मिक उपन्यास है। उसमें आज के अर्थप्रधान युग में बनते–बिगड़ते सम्बन्धों का मार्मिक चित्राण हुआ है।"14 इस प्रकार शिवानी ने इस उपन्यास के जरिए प्रेम के महत्त्व को उजागर किया है जिसका स्वरूप रोमांटिक है और इसके साथ ही उन सामाजिक बन्धनों का खंडन किया है जो अनैतिकता को आश्रय देते है।

चौदह फेरे :

'चौदह फेरे' यथार्थ के धरातल पर आधारित रचना है। इस उपन्यास का रचनाकाल 1957 है। "'चौदह फेरे' कद्मामाऊ प्रदेश के दो मित्याभिमानी पुरुषों के अहं की कहानी है।"15 'चौदह फेरे' उपन्यास की कथावस्तु इस प्रकार है। 'चौदह फेरे' उपन्यास के कर्नलसाहब एक ओर पहाड़ी परंपराओं को मान्य समझते हैं, दूसरी तरफ वे कलकत्ता के महानगरीय जीवन को आधुनिक एवं स्वतंत्रा रूप से जीते हैं। एक ओर अपनी भोली और सीधी स्त्राी पर अत्याचार करते हैं। मल्लिका को रखैल बनाकर रखते हैं और दूसरी ओर उच्चशिक्षिता अहल्या का विवाह अपनी जात में परम्परापूर्ण ढंग से करना चाहते हैं। उनका व्यक्तित्व आधुनिकता और परम्परा दोनों से संघर्ष करने लगता है। अहल्या एक ऐसी आधुनिक स्त्राी है, जो नारी का स्वाभिमान रखने में सक्षम है। पिता के धनाढय होने पर भी वह अध्यापिका की नौकरी कर आत्मनिर्भर बनती है तथा शहर की तुलना में गाँव के सुसंस्कृत एवं अबोध जीवन को प्यार करती है। अभिजात्य वर्गीय परंपराओं को वह समाज में नारी के अस्तित्व को बनाने में सफल होती है। नायक कर्नल अपनी पत्नी नंदी की उपेक्षा करता है जिससे वह सन्यास धारण कर लेती है। कर्नल मल्लिका से प्यार करता है, मल्लिका कद्मछ वर्षो बाद उसे छोड़कर काशी चली जाती है। उसकी पुत्राी अहल्या कर्नल द्वारा चुने गये युवक से विवाह नहीं करती

जिसे कर्नल सहन नहीं कर पाता और मालवा जाने की तैयारी करने लगता है। इस प्रकार 'चौदह फेरे' उपन्यास के जरिये लेखिका ने समसामायिक जीवन की समस्याओं और प्रभावों को मूर्त करने का प्रयत्न किया है और इसमें वे सफल हुई है।

कृष्णकली :

'कृष्णकली' सन् 1962 में लिखा शिवानी का तीसरा चरित्रा प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास में शिवानी ने मध्यमवर्गीय पात्राों की जीवन कथा को प्रस्तुत किया है। कृष्णकली के विविध गुणों से उभारने के लिए लेखिका ने इस उपन्यास की रचना की है। मुखपृष्ठ पर दिए नए वक्तव्य के अनुसार शिवानी की कृष्णकली लौहसंकल्पिनी मानस संतान है। "एक अद्भुत चरित्रा जो अपनी जन्मजात ग्लानि और अपावनता के कदम से प्रस्फद्यटित होकर कमल–सा फüलता है, सौरभ सा महकता है और मादक पराग–सा अपने सारे परिवेश को मोहाच्छन्न कर देता है।'कृष्णकली' उपन्यास की नायिका कृष्णकली है। कृष्णकली के माता–पिता कोढ़ी हैं। उसकी परवरिश पन्ना नामक एक वेश्या करती है। जब कृष्णकली को पता चलता है कि पन्ना उसकी माँ नहीं है तब वह माँ का घर छोड़कर मॉडलिंग करने लगती है और एक होटल में रिसेप्शनिष्ट बन जाती है। कृष्णकली बुरे से बुरा काम करने से भी नहीं कतराती। उसने हारना या झुकना नहीं सीखा है, हां वह टूट अवश्य जाती है। एक बार उसे प्रवीर नामक युवक मिला जिसे उसने अपना आराध्य समझ लिया और उसकी माँ के घर रहने लगी। परन्तु प्रवीर का विवाह किसी और जगह हो जाने पर वह निराश होती है। उसे कैंसर हो जाता है। प्रवीर उसे देखने जाता है। प्रवीर के लौटने के पूर्व ही कृष्णकली 'स्लीपिंग पिल्स' की पूरी शीशी खाकर मौत को गले लगा लेती है। उपन्यास की कथावस्तु किसी समस्या विशेष से जुड़ी नहीं है। साथ ही वह किसी वर्ग विशेष की कहानी भी नहीं है। किन्तु मनुष्य की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक मान्यताओं का अतिक्रमण करती हुई वह समूची मानवता की कथा हो गई है।

निष्कर्ष

हिन्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय कथा लेखिका गौरा पंत 'शिवानी' जन्मी भले ही गुजरात में पर उनके व्यक्तित्व में कुमाऊँ एवं बंगाल का संस्कृति का अद्भुत मिश्रण रहा है। उनकी बहुत सी कथा–कहानियों में जहाँ एक ओर कुमाऊँनी अंचल के लोक–जीवन का सुन्दर और सटीक चित्रण मौजूद है वहीं उनकी रचनाओं में तत्सम, समासयुक्त शब्दावली के साथ–साथ बांग्ला साहित्य और बांग्ला भाषा का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। इस प्रभाव के पीछे शिवानी के अपने पारिवारिक तथा वे प्रारंभिक शिक्षा संस्कार थे, जो उन्हें शांति– निकेतन आश्रम में नौ वर्षों के शिक्षाकाल में मिले। इसी पृष्ठभूमि ने उनकी लेखनी को सशक्त और रचनाओं को संवेदनशील बना दिया है। शिवानी जी ने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपने बहुआयामी व्यक्तित्व का परिचय दिया है। इन्होंने उपन्यासों के साथ–साथ कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, निबन्ध, रिपोर्ताज, यात्रा–वृतान्त, इतिहास एवं बाल–साहित्य की रचना कर हिन्दी–साहित्य की विपुल समृद्धि प्रदान की है। अपने साहित्य–सृजन के उद्देश्य के संबंध में शिवानी जी स्वयं कहती हैं–''मेरे साहित्य–सृजन का मुख्य उद्देश्य यह रहा है कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में फैली अराजकता, भ्रष्टाचार, अनाचार, कुरीतियों एवं विसंगतियों को आम जनता जाने और समझे। ऐसा साहित्य रचा जाए जो जन साधारण को भी ऊपर उठाये। साहित्य आदर्शोन्मुख एवं वास्तविक हो, जिनसे जन–समुदाय का कल्याण हो।''

संदर्भ ग्रन्थ सूची

साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास में नारी – डॉ. नीलम मैगज़ीन 'गर्ग' (उद्धरण) – पृ. 14

शिवानी के उपन्यास के पात्रा – डॉ. सुष्मा पुरवार – पृ. 15

सुरंगमा – शिवानी – मुख पृष्ठ

जालक – शिवानी – पृ. 16

शिवानी के उपन्यासों में समाज – डॉ. सिद्राम खोट – पृ. 15

शिवानी के उपन्यासों के पात्रा – डॉ. सुष्मा पुरवार – पृ. 17

शिवानी के उपन्यासों में समाज – डॉ. सिद्राम खोट – पृ. 1

शिवानी के उपन्यासों के पात्रा – डॉ. सुष्मा पुरवार – पृ. 24

शिवानी के उपन्यासों के पात्रा – डॉ. सुष्मा पुरवार – पृ. 25

आमोदेर शान्तिनिकेतन – शिवानी – पृ. 11

चरैवेति – शिवानी – पृ. 13

आमोदर शान्तिनिकेतन – शिवानी – पृ. 61

शिवानी के उपन्यासों के पात्रा – डॉ. सुष्मा पुरवार – पृ. 22

आमोदर शान्तिनिकेतन – शिवानी – भूमिका पृ. 7

शिवानी के उपन्यासों के पात्रा – डॉ. सुष्मा पुरवार – पृ. 22

आमोदर शान्तिनिकेतन – शिवानी – पृ. 94